ज्योतिर्विज्ञान की सीमाएँ : एक गवेषणात्मक अध्ययन

बीज शब्द : ज्योतिर्विज्ञान, ज्योतिष, भारतीय काल गणना, भविष्य कथन।

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

ज्योतिष विद्या प्रारब्ध को भारतीय काल गणना अत्यंत समृद्ध और युक्ति संगत है। इसे विज्ञान. सम्मत कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। ज्योतिष को अज्ञानता और अज्ञानियों के प्रभाववश अंधश्रद्धा के क्षेत्र के विषय में परिगणित किया जात है। यह शोध आलेख ज्योतिषर्विज्ञान के विज्ञान होने की संभावना एवं सीमा को अन्वेषित करता है।

डॉ. संजय कुमार सिंह
सचिव,
उ०प्र० उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग,
इलाहाबाद।

ज्योतिष को ज्योतिर्विज्ञान कहा जाना उचित होगा, क्योंकि ज्योतिष निश्चित रूप से प्रत्यक्ष अनुभव किया जाने वाला एक महाविज्ञान है, किन्तु विज्ञान की अन्य शाखाओं की भांति इसकी भी अपनी एक सीमा है और उस सीमा के अन्तर्गत रहकर ही किसी परिणाम की आशा की जानी चाहिए, क्योंकि कोई भी विज्ञान शत-प्रतिशत अपेक्षित परिणाम प्रस्तुत नहीं कर सकता। यदि व्यवहार में ऐसा संभव होता तो उस विषय पर भविष्य में शोध की संभावनाएं स्वत: समाप्त हो जाती साथ ही वह प्रत्यक्षत: ईश्वर के समतुल्य हो जाता, किन्तु ऐसा नहीं है। ज्ञान एवं शोध निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो कभी समाप्त नहीं होती बल्कि समय के साथ वह परिपक्व व परिमार्जित होती जाती है। प्रतिदिन ज्ञान के नये-नये क्षेपक उसमें जुड़ते चले जाते है और वह विज्ञान जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होने लगता है। आज विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में लगातार गंभीर अनुसंधान कार्य हो रहे हैं जबकि ज्योतिष में इसका अभाव है। आज के ज्योर्तिविद् मानव कल्याण के निमित्त प्रकृति व मानव के मध्य सामंजस्य स्थापित कर मानव जीवन को ज्यादा सहज, सरल व वैज्ञानिक बनाये जाने हेतु ज्योतिष पर अनुसंधान कार्य करने की अपेक्षा इसको धनार्जन का एक सशक्त माध्यम बनाए हुए है।

जहां तक एक ही कुंडली पर विभिन्न ज्योर्तिविद्ों द्वारा अलग-अलग दी जाने वाली भविष्यवाणियों का प्रश्न है, जब एक मरीज कई डाक्टरों के पास व्याधि से संबंधित विषय पर परामर्श लेने हेतु जाता है तो उस विषय पर उनके अलग-अलग राय प्राप्त होते हैं। ऐसी ही स्थिति ज्योतिषीय भविष्यवाणी के क्षेत्र में भी परिलक्षित होती है, किन्तु, ऐसा होने मात्र से संबंधित विषय को अवैज्ञानिक नहीं ठहराया जा सकता है, क्योंकि वह विषय और उस विषय की वैज्ञानिकता तो सदैव अपने स्थान पर यथावत बनी रहेगी हां, उस विषय को केन्द्र में रखकर उसकी व्याख्या करने वाले विद्वान की शोधात्मक ज्ञान अधूरी हो सकती है, उनकी विश्लेषण क्षमता कमजोर हो सकती है, संबंधित विषय पर उनकी पकड़ गहरी न होने के कारण वे उस विषय की सही तस्वीर प्रस्तुत कर पाने में असफल सिद्ध हो सकते हैं। साथ ही किसी गंभीर विषय पर एक विद्वान द्वारा प्रस्तुत समाधान के क्रम में उसी विषय पर किसी अन्य विद्वान द्वारा प्रस्तुत समाधान में भिन्नता हो सकती है। एक ही विषय पर अलग-अलग विद्वानों द्वारा दिये गये भिन्न-भिन्न परामर्श और उस परामर्श संबंधी भिन्नता को तभी दूर किया जा सकता है जब संबंधित विषय पर उपलब्ध समस्त ज्ञान को समेकित कर उस पर गंभीर शोध कार्य किया जाय। ज्योतिष में किसी एक बिन्दु पर निश्चित

परिणाम तक पहुंचने में बहुतेरे कारकों को ध्यान में रखना पड़ता है। एक छोटी-सी चूक परिणाम को उलट सकती है। यद्यपि इस तरह की चूक मानव द्वारा संभव है, लेकिन, ऐसे चूक को दूर करने का प्रयास सदैव होते रहना चाहिए, किन्तु इस प्रयास में सफलता तभी संभव है जब ज्योतिष से जुड़े हर बिन्दु पर निरंतर शोध कार्य किया जाय और यह कार्य जन सामान्य वर्ग एवं शासक वर्ग द्वारा ज्योतिषियों पर विश्वास और उनके प्रोत्साहन के उपरान्त ही संभव हो पाएगा।

जहाँ तक ज्योर्तिविदों द्वारा की जाने वाली राजनैतिक भविष्यवाणियों का प्रश्न है, इसे निम्न दृष्टान्त द्वारा समझा जा सकता है- एक पारिवारिक ज्योतिषीय परिचर्चा के समय टाइम्स ऑफ इंडिया के वरिष्ठ पत्रकार जो बी0जे0पी0 सांसद श्री मुरली मनोहर जोशी के अत्यन्त निकटस्थ थे, उन्होंने श्री जोशी की कुंडली उपलब्ध कराकर मुझसे दो प्रश्न पूछा था कि क्या श्री जोशी इलाहाबाद से इस बार पुनः सांसद चुने जायेंगे और क्या ये इस बार भारत के प्रधानमंत्री बनेंगे? यह घटना वर्ष 2004 की है। मेरा उत्तर स्पष्ट था कि जब ये इस बार इलाहाबाद से सांसद ही नहीं चुने जायेंगे तो प्रधानमंत्री कहा से बनेंगे। यद्यपि मेरी बात पर उन्हें जरा भी विश्वास नहीं हुआ और वे बड़े ही दंभी स्वर में बोले कि मेरे गुरूजी, जो कि तांत्रिक है, उन्होंने कहा है कि इस बार तो श्री जोशी ही प्रधानमंत्री बनेंगे। मैं उन्हें अपने ज्योतिषीय ज्ञान से संतुष्ट करने का प्रयास किया कि श्री जोशी को आगामी समय में मिलने वाली दशा और दशा निर्मित दुर्योग के कारण वे लोक सभा में निर्वाचित ही नहीं हो पायेंगे और उस पराजय के कारण उन्हें घोर अपमान का सामना करना पड़ेगा तथा आज वे जिस राजनैतिक ऊँचाइयों पर है उसपर ग्रहण लग जाएगा। परिणाम सामने रहा और वे प्रश्नगत निर्वाचन में पराजित हो गये। साथ ही बी.जे.पी. की सरकार भी नहीं बनी और 22.05.2004 को लोकसभा सदस्य न होने के बावजूद डॉ0 मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री बन गये। पत्रकार महोदय का अगला प्रश्न था कि यदि जोशी प्रधानमंत्री नहीं बनेगे तो आखिर कौन बनेगा, इस प्रश्न का उत्तर मेरे पास नहीं था, जबकि भारत के बहुतेरों ज्योर्तिविद्ों में से कुछ इलेक्ट्रानिक्स मीडिया के माध्यम से और कुछ प्रिंट मीडिया के माध्यम से श्री अटल जी को, श्री आडवानी जी को और किसी ने श्रीमती सोनिया गांधी को अपने-अपने ज्योतिषीय तर्कों के माध्यम से प्रधानमंत्री के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया था। मेरा मत स्पष्ट था कि जिस पद के लिए कई योग्य प्रत्याशी हो और उन सभी संभावित प्रत्याशियों की यदि सही जन्मपत्री उपलब्ध न हो तो उस पर ज्योतिषीय विचार अथवा भविष्यवाणी मात्र अपने को प्रचारित करने के उद्देश्य से नहीं करना चाहिए। हाँ, यदि यह स्पष्ट हो कि किसी पद के लिए मात्र दस ही प्रत्याशी है और उन्हीं दस में से किसी एक को प्रश्नगत पद मिलना है तथा उन सभी की सही जन्मकुंडली उपलब्ध हो, तो शत-प्रतिशत सही भविष्यवाणी की जा सकती है कि उनमें से कौन प्रत्याशी आलोच्य पद को धारण करेगा। अन्यथा कि स्थिति में की गयी ज्योतिषीय भविष्यवाणियाँ गलत ही होगी और ऐसा होने पर ज्योतिषी और ज्योतिष की वैज्ञानिकता पर से लोगों का विश्वास उठता चला जाएगा। वर्तमान समय में किसी राजनैतिक व्यक्ति के संबंध में की जाने वाली भविष्यवाणियां इसलिए भी गलत एवं झूठी सिद्व हो रही है क्योंकि ज्यादातर भविष्यवाणियाँ स्वार्थ के वशीभूत होकर की जा रही है। संबंधित व्यक्ति की जन्म कुंडली सही है या नहीं, इस बात का परीक्षण करने के लिए आज किसी भी ज्योतिषी के पास समय नहीं है। यही नहीं, आज ज्यादातर भविष्यवक्ता अपने सामने बैठे व्यक्ति को व्यावसायिक कारणों से नाखुश नहीं करना चाहते। भविष्य के प्रति जिज्ञासा रखने वाले जातक भी सच सुनने को तैयार नहीं। वे सदैव अच्छा सुनना चाहता है। नकारात्मक सच सुनने के लिए वे बिल्कुल ही तैयार नहीं होते। इतना नहीं बल्कि आज कई राजनैतिक पार्टियां एवं उससे जुड़े बड़े-बड़े राजनेता स्वयं के अतिरिक्त अपनी पार्टी को भविष्य में सफल होने की बात ज्योतिषियों के माध्यम से झूठे प्रचारित करवाकर जनता का विश्वास जीतना चाहते हैं। अतः इसलिए भी कई राजनैतिक भविष्यवाणियां गलत सिद्ध होती है। इसके अतरिक्त ज्योतिषियों का अपना अल्प ज्ञान एवं उनके अंदरशोधात्मक बुद्धि का अभाव आदि भी जन्म कुण्डली का सही तस्वीर प्रस्तुत कर पाने में अक्षम है। अस्तु, निजी जीवन में जब हम ज्योतिष को स्वीकार करते है तो देश और समाज के संदर्भ भी इस विद्या का सही उपयोग अवश्य होना चाहिए। ऐसा करने से देश और समाज दोनों का अवश्य भला होगा।

अब यह प्रश्न उठ सकता है कि डॉ. जोशी की कुंडली के अनुसार तत्समय किस ग्रह की दशा, दशा निर्मित कौन सा दुर्योग एवं उनके पतन के और कौन-कौन से ज्योतिषीय कारक थे जिसके कारण वे अर्श से फर्श पर पहुंच गए।

जन्म तिथि व समयः 05.01.1934, 10.20 AM,नई दिल्ली, मघा-III चरण(केतु), वर्ण-क्षत्रिय, नाड़ी-अन्त्य।

कारकः आत्म-शु.,अमात्य-बृह.,भातृ-श.,भातृ-सू.,पुत्र-मं., ज्ञातृ-बु.,दारा-चं.,कारकांश-कन्या।

जन्म चक्र

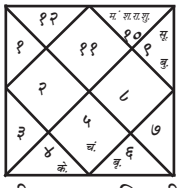

नवांश चक्र

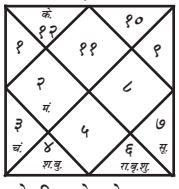

गोचर चक्र

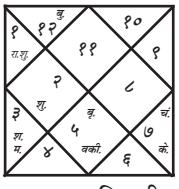

श्री अटल बिहारी बाजपेयी के नेतष्त्व में जब-जब दिल्ली की

सरकार बनी डॉ0 जोशी भारत सरकार में कैबिनेट मंत्री बने और भारतीय जनता पार्टी में श्री अटल, आडवानी के बाद तीसरे कतार के महत्वपूर्ण सर्वमान्य राजनेता रहे हैं। इनकी जन्मपत्री के विश्लेषण के क्रम में सर्वप्रथम पराशरी एवं जैमिनीय योगों पर विचार करना आवश्यक होगा-

1. द्वादश का शुक्र धन, सम्पदा व वैभव प्रदान करता है। प्रश्नगत कुण्डली में व प्रबल योगकारक होकर अर्थात् भाग्येश-शुखेश के रूप में मित्र राशि में द्वादश में स्थित होने के कारण व जीवन के उत्तरार्द्ध में समस्त सुख व समृद्धि प्रदान करने के लिए आतुर है। योगकारक होकर लग्नेश एवं दशमेष के साथ व बैठकर और भी योगकारक हो गया है तथा द्वादश भाव में कई योगों का निर्माण कर रहा है।

2. चूंकि द्वादश भाव में म0, श0, रा0 के साथ शुक्र बैठा हुआ है और तीनों ग्रह किसी न किसी रूप में अलग-अलग राजयोग में बनाए हुए है। साथ ही उस राजयोग के निर्माण में राहु भी संलग्न है। शनि स्वग्रही है एवं मंगल उच्च का है अत: 36 वर्ष की अवस्था के उपरान्त क्रमश: राजनैतिक पहचान बननी चाहिए तथा 42 वर्ष के उपरान्त राजनीति में या पार्टी में कोई जिम्मेदार पद प्राप्त होना चाहिए एवं 48 वर्ष के उपरान्त प्रत्यक्ष राजनैतिक दंगल में उतरना चाहिए तथा साठवें वर्ष में या उसके उपरान्त वांछित पद की प्राप्ति होनी चाहिए।

3. राजनैतिक सफलता एवं संवैधनिक पद की प्राप्ति में सू0,बु0 द्वारा निर्मित बुद्धादित्य योग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है वह भी तब जब एकादश भाव में योगकारक होकर निर्मित हो। ऐसी स्थिति में आलोच्य पद पाने से कोई रोक नहीं सकता तथा परिस्थितियाँ एवं व्यक्ति की मनोवृत्तियाँ उसी के अनुरूप बनने लगती है। सू0, बु0 में केन्द्र-त्रिकोण राजयोग बनने के साथ ही बु0, बृ0 में स्थान परिवर्तन राजयोग भी निर्मित है।

4. बु0,बृ0 अर्थात् अष्टम्-एकादश में स्थान परिवर्तन योग होने के कारण जीवन में अच्छा-बुरा अप्रत्याशित एवं अचानक होना चाहिए। निराशा की स्थिति में आशा का संचार एवं नया मार्ग प्रशस्त होना चाहिए, जबकि अत्यधिक आशावान होने की स्थिति में निराशाजनक एवं अपमानजनक स्थितियां बननी चाहिए।

5. चूँकि लग्नेश, चतुर्थेश, नवमेश, दशमेश का राहु, उच्च के मंगल एवं स्वग्रही शनि के साथ द्वादश भाव में बन रहे संयुक्त योग के कारण इन्हें सत्ता प्राप्ति में धार्मिक हिंसा, जातिगत हिंसा, आतंक, भय की महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए। योगकारक ब्रहस्पति की भी द्वादश पर पंचम दृष्टि पड़ने के कारण यद्यपि स्थितियां नियंत्रण में रहते हुए घटनाओं के साथ लक्ष्य तक पहुँचाने वाली होंगीं।

6. द्वादश भाव के राहु एवं षष्ठ भाव के केतु के मध्य सारे ग्रह स्थित होने के कारण काल सर्प बना हुआ है। वह दर्शित करता है कि धर्म एवं अध्यात्म का शरण प्राप्त करने की स्थिति में उपलब्धियाँ तो प्राप्त होंगी, किन्तु अपने ही विश्वसनीय लोगों के द्वारा अविश्वास एवं विश्वासघात का सामना करना पड़ेगा और वे षड्यंत्र के शिकार होंगे किन्तु जीवन के अंतिम समय तक कर्म क्षेत्र से जुड़ाव बना रहेगा ।

7. मानव संसाधन विकास मंत्री, विदेश मंत्री एवं कानून मंत्री के रूप में ये उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन कर सकते है, किन्तु प्रधानमंत्री बनना संदिग्ध रहेगा।

8. जन्मपत्री में चन्द्र सूर्य की जो स्थिति है, उसके हिसाब से न्यूनतम एक पुत्र का होना दर्शाता है, भले ही वह पैदा होने के उपरान्त या पैदा होने के पूर्व ही नष्ट हो जाए। अन्यथा पुत्री होने की स्थिति में एक पुत्री में पुरूषोचित गुण होना दर्शित होता है।

दशा	गोचर	उपलब्धि/घटनाएँ
रा.च.शु., धान्या-भ्रामरी, वृषिचक-कुंभ	मेष-मं., धनु-बृ.(ब), मीन-श., के., कन्या-रा.	16.05.1996 - 01.06. 1996
बृ.बृ.श., धान्या-संकटा, धनु-तुला	सिंह-रा.,कुंभ-बृ.के., मीन-मं.श.	19.03.1998-13.10.1999
बृ.श.श., भ्रामरी-भद्रिका, धनु-सिंह	मेष-श.(व) बृ.(व), कर्क-रा., धनु-म., मकर-के.	13.10.1999-21.05.2004
बृ.बु.श., भद्रिका-सिद्धा, धनु-कुंभ	मेष-रा., मिथुन-श.मं., सिंह-बृ., तुला-के.	पदच्युत-21.05.2004

दशा गोचर और उपलब्धियों को दृष्टिगत रखते हुए स्वत: स्पष्ट हो जाता है कि आलोच्य उपलब्धियों को दिलाने में जन्मपत्री में उपलब्ध योग, योग कारक ग्रहों की दशा एवं श.बृ. एवं मं. के गोचर की महत्वपूर्ण भूमिका रही। तत्समय जैमिनी चर दशा भी पूर्णरूपेण सहयोग प्रदान करती रही। अमात्यकारक बृहस्पति की महादशा में उपलब्धियाँ प्राप्त होनी ही थी साथ ही चर दशा के अंतर्गत राशियों की महादशा व अंतदशा से दशम व एकादश भाव को पंचमेष व पुत्रकारक से सम्बन्ध स्थापित किया जाना कर्मक्षेत्र में विशेष उपलब्धियाँ प्राप्त करने को प्रमाणित करता है। अत: जन्मपत्री के युगों को प्रारब्ध एवं कालचक्र ने यथासमय जागृत कर दिया।

जहाँ तक वर्ष 2004 के निर्वाचन में पराजित होने व उनके राजनैतिक कैरियर पर ग्रहण लगने का प्रश्न है? इस प्रश्न को योग, दशा एवं गोचर के परिपेक्ष्य में समझा जा सकता है। दशा- बृ. बु.श.।

इन ग्रहों में से किसी का भी चतुर्थ, पंचम, नवम व दशम भाव से प्रत्यक्ष संबंध नहीं बन पा रहा था और न ही ये तीनों ग्रह इन भावों में स्थित थे, बल्कि बृहस्पति का संबंध अष्टम भाव से एवं बुध का भी संबंध अष्टम भाव से बना हुआ है। साथ ही इन दोंनों में परिवर्तन योग भी बना हुआ है जो तत्समय के राजनैतिक स्तर को पतन की ओर अपमानजनक स्थिति में

लाने के लिए तत्पर थे । बृ. बु. में आपस में नैसर्गिकशत्रुतापूर्ण संबंध होने के कारण इन्हें पराजित करने में आपस के शिक्षकों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी शनि स्वग्रही होकर द्वादश भाव में स्थित था और एकादश भाव में अष्टमेश बुध के स्थित होने के कारण दोनों के मध्य द्वि-द्वादश दुर्योग बना हुआ था जो वर्तमान राजनैतिक स्तर को व्यय करने के लिए तत्पर थे ।

1. बुध के बाद आने वाली केतु की दशा भी अच्छी प्रतीत नहीं हो रही थी, क्योंकि वह भी जलीय राशि में स्थित होकर छठे भाव में स्थापित था ।

2. योगिनी में भद्रिका और सिद्धा की दशा चल रही थी अर्थात बुध में शुक्र की अर्न्तदशा जो जन्म के समय लाभेश- व्ययेश में स्थित होकर द्वि-द्वादश दुर्योग बनाये हुए हैं । यह भी पराजय को ही रेखांकित कर रहा था ।

3. जैमिनी चर दशा के अन्तर्गत धनु व कुम्भ राशि की दशा उस समय चल रही थी। सभी योग कारक ग्रह कुम्भ राशि से या तो द्वादश भाव में या अष्टम भाव में स्थित थे। इससे भी अशुभता व पराजय जनित अपमान का संकेत मिल रहा था ।

4. बुध की अर्न्तदशा में जहॉ से अष्टम भाव में कर्म क्षेत्र दिखलायी पड़ रहा था अर्थात तत्समय अष्टम भाव कर्म क्षेत्र को रेखांकित कर रहा था और चतुर्थ भाव से षष्ठेश का संबंध, अष्टम भाव से दशम- दशमेश का संबध या नवम भाव-नवमेश का, एकादश भाव- एकादशेश से दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं बन पा रहा था जिससे असफलता शत-प्रतिशत प्रमाणित हो रही थी ।

गोचर-

शनि : जन्म से छठे स्थान पर भ्रमण करते हुए षडाष्टक दुर्योग बनाये हुए था ।

बृहस्पति : जन्म से द्वादश स्थान पर भ्रमण करते हुए द्वि-द्वादश दुर्योग बनाये हुए था।

मंगल : जन्म से छठे स्थान पर भ्रमण करते हुए षडाष्टक दुर्योग बनाये हुए था ।

इस प्रकार शनि, बृहस्पति एवं मंगल तीनों के गोचर जन्मस्थ से प्रतिकूल थे ।

राहु-केतु : ये निर्वाचन से पूर्व लग्न से चतुर्थ-दशम एवं चन्द्र से दशम-चतुर्थ भ्रमण कर ग्रहण के माध्यम से उनके पतन की भूमिका तैयार कर चुके थे । अत: ऐसी स्थिति में तत्समय उनके विजित होने और उन्हें प्रधानमंत्री बनाये जाने का प्रश्न ही नहीं था।

जहाँ तक तत्कालीन मीडिया द्वारा प्रस्तुत की गयी सम्भावित प्रत्याशियों के रूप में श्री अटल बिहारी बाजपेयी, श्री एल. के. आडवाणी एवं श्रीमती सोनिया गॉधी का प्रश्न है ? अब उनकी कुण्डली पर विचार करने के साथ ही साथ ज्योतिषीय दृष्टि से बने योग, दशा एवं गोचर पर भी विचार करना आवश्यक होगा कि वे प्रधानमंत्री बनने से वंचित क्यो रह गये ?

१. श्री अटल बिहारी बाजपेयी

जन्म तिथि व समय: 25.12.1924, 05:51एग्वालियर, म.प्र., ज्येष्ठा-III चरण(बुध), वर्ण-ब्राहम्ण, नाड़ी-आदि।

कारक: आत्म-चं.,अमात्य-श.,भातृ-बु.,भातृ-शु.,पुत्र-मं.,ज्ञातृ-सू., दारा-बृं.,कारकांश-कुम्भ।

दशा	गोचर	उपलब्धि/घटनाएँ
बृ.श.सू. उल्का-भ्रामरी कन्या-तुला	मेष-रा.बु., मिथुन-श.मं.शु.(ब), सिंह-बृ., तुला-के.	21.05.2004

गोचर चक्र

योग-

शु.च. का एक साथ होना जैमिनी योग के अनुसार एक महत्वपूर्ण राजयोग का निर्माण होता है। वह भी यदि लग्न में उक्त योग बन रहा हो तो पूछना ही क्या है? यही नहीं षु.सप्तमेष एवं च. भाग्येष लग्न में स्थित होकर विशेष राजयोग का निर्माण कर रहे है। लग्नेष का पंचम में जाना तथा दशमेश-पंचमेश का एक साथ द्वितीय भाव में स्थित होकर उच्च कोटि का राजयोग बनाना उत्थान को दर्शाता है। द्वितीय भाव में उक्त योग बनने के कारण वाणी ही इनकी शक्ति रही है और उच्च पदों पर पहुँचने में वाक् शक्ति एवं वक्तष्त्व कला की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। द्वादश भाव में उच्चस्थ श. जोकि चतुर्थेष भी है, द्वितीय भाव पर उसकी दृष्टि होने के कारण श.बृ. सम्बन्ध उनके जीवन के उत्तरार्द्ध में उच्च संवैधनिक पद की प्राप्ति को दर्शाता है। राहु भी नवम् भाव में कर्क राशि में योगकारक होकर बैठा है और द्वादशस्थ चतुर्थेष शनि की उस पर दृष्टि भी है। राहु की महादशा और शुक्र की अन्तर्दशा में वे प्रथम बार प्रधानमंत्री बने थे, किन्तु चतुर्थ भाव या चतुर्थेश से सम्बन्ध न होने के कारण अल्प समय में ही उनका पतन हो गया। सूर्य की अन्तर्दशा में ज्योतिषीय सिद्धान्त को पूर्ण होने के कारण वे पुन: प्रधानमंत्री बने किन्तु राहु से षडाष्टक होने के कारण कतिपय विवादों के उपरान्त वे पुन: सिंहासन से हट गए, किन्तु योगकारक मंगल की अन्तर्दशा में वे पुन: विराजमान हो गए और अपना कार्यकाल पूर्ण किए। इस प्रकार उनकी कुण्डली में निर्मित योग, दशा एवं गोचर ने परिणाम को प्रस्तुत प्रशस्त किया। गोचर प्रत्येक परिणाम को परिणति तक पहुँचाने हेतु उत्प्रेरित करने

का काम करता है।

दशा–

बृ.श.सू. में उनका पतन हुआ। योगिनी दशा उल्का में भ्रामरी अर्थात् शनि में मंगल की अन्तर्दशा चल रही थी शनि द्वादश में एवं मंगल पंचम में स्थित था और दोनों षडाष्टक योग बनाए हुए है। मंगल लग्नेष होने के साथ ही साथ षष्ठेष तथा शनि चतुर्थेश होने के साथ ही साथ तृतीयेश होकर द्वादश भाव में बैठा हुआ है। यह दर्शित कर रहा है कि स्वयं के गलत निर्णय एवं आपसी विवाद के कारण वर्तमान स्तर में ह्रास होना चाहिए। साथ ही जैमिनी चर दशा के अन्तर्गत कन्या में तुला की दशा चल रही थी तुला की दशा में लिए गए निर्णय एवं कार्य उचित व उत्थान परक नहीं थे। यदि तत्समय का निर्णय कन्या राशि में लिए जाते अर्थात् लोकसभा का निर्वाचन अपने नियत समय पर होता तो उन्हें पुनः प्रधानमंत्री बनने से कोई रोक नहीं सकता था।

गोचर–

श.–मं. का गोचर लग्न से एवं च. से अष्टम था। बृ. का गोचर लग्न एवं च. से दशम् में सिंह राशि में था तथा रा.के. का गोचर लग्न एवं चं. से दशम् भाव से होकर नवम् भाव में हो रहा था। स्पष्टतः तत्समय के गोचर प्रतिकूल होने एवं पतन की ओर अग्रसर कराने वाले होने के कारण जल्दी में लए गए निर्णय आगे के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया। अतः आने वाले समय में इन्हें प्रधानमंत्री पुनः बनने की संभावना समाप्त हो चुकी थी

२. श्री एल. के. आडवाणी

जन्म तिथि व समयः 08.11.1927, 09:16, हैदराबाद, पाकिस्तान, अश्विनी–II चरण,वर्ण–क्षत्रिय, नाड़ी–आदि।

कारकः आत्म–बु.,अमात्य–सू.,भातृष–मं.,भातृ–श.,पुत्र–चं.,ज्ञातृ–शु., दारा–बृं.,कारकांश–मिथुन।

दशा	गोचर	उपलब्धि/घटनाएँ
बृ.चं.रा. भद्रिका–सिद्धा मकर–मीन	मेष–रा.बु., मिथुन–श.मं.शु.(ब), सिंह–बृ., तुला–के.	21.05.2004

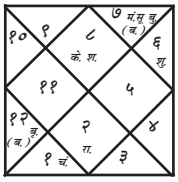

योग–

लग्नेश–भाग्येश का दृष्टिगत सम्बन्ध है, किन्तु दोनों का संबंध छठे, द्वादश भाव में बन रहा है। पंचमेश–सप्तमेश में दृष्टिगत सम्बन्धशुभ भाव में हो रहा है, किन्तु पंचमेष बक्री एवमं सप्तमेश नीच को होकर बैठा है। इसके कारण निर्मित राजयोग खण्डित हो रहा है। दशमेश, लग्नेश एवं लाभेश का संयुक्त राजयोग द्वादश भाव में बन रहा है, किन्तु वहाँ भी लाभेश बक्री होकर एवं दशमेश नीच का होकर न केवल राजयोग को खण्डित कर रहा है, बल्कि निर्मित राजयोग जन्म स्थान से दूरस्थ एवं जीवन के उत्तरार्द्ध में फलीभूत होने को रेखाकिंत कर रहा है। कुण्डली में ग्रहों की युतिगत, दृष्टिगत एवं स्थानगत संबंधों के कारण कई सारे ऐसे योग बने हुये हैं जिनसे स्पष्ट है कि ऐसे जातक को उच्चतर शिखर पर पहुँचने से रोका नहीं जा सकता, किन्तु उक्त राजयोग में कतिपय दोष होने और वांछित समय पर यथोचित दशा का सहयोग प्राप्त न होने साथ ही वाछित गोचर का सहयोग न मिल पाने के कारण वे प्रधानमंत्री नहीं बन सकते थे, और आगे भी संभवना क्षीण है।

दशा–

बृ.– यह वक्री होकर यद्यपि पंचम भाव में स्वग्रही होकर स्थित है और अर्न्तदशा के स्वामी चन्द्रमा भाग्येश होकर छठे भाव में मित्र राशि में बैठा हुआ है, और दोनों के मध्य जन्म के समय द्वि–द्वादश दुर्योग बना हुआ है अतः वर्तमान स्तर में परिवर्तन एवं वर्तमान पद से मुक्ति अर्थात व्यय को रेखांकित कर रहा था । अतः योगकारक होने के कारण उन्हें संसद में पहुँचना तो तय था किन्तु प्रधानमंत्री बनना नहीं ।

1. भद्रिका एवं सिद्धा की योगिनी दशा अर्थात बुध एवं शुक्र नैसर्गिक रूप में योग कारण न होने के बावजूद जन्म के समय द्वादश भाव में ही द्वि–द्वादश दुर्योग बनाये हुये है। अतः परिणाम प्रतिकूल ही मिलना था ।

2. जैमिनी चर दशा के अन्तर्गत मीन राशि की दशा से योगकारक ग्रह अष्टमभाव में बैठे थे और उससे दशम व एकादश भाव पर उन ग्रहों का युतिगत या दृष्टिगत संबंध न बनने के कारण योग कमजोर था ।

गोचर–

शनि :

अष्टम भाव में भ्रमण उत्थान के लिये अच्छा नहीं होता, वह भी तब जब जन्म से भी अष्टम गोचर हो रहा हो और ऐसा होने पर जीवन में अप्रत्याशित घटनायें घटित होती है। यदि अन्य परिस्थितियाँ प्रतिकूल हों तो अष्टमशनि का गोचर सामान्यतः प्रतिकूल ही जाता है।

बृहस्पतिः

दशमभाव में भ्रमणशुभ था किन्तु जन्म से छठा भ्रमणशुभ नहीं था ।

मंगलः

अष्टम भाव में भ्रमण एवं 4, 5, 9, 10वें भाव से न बनाना उप्लब्धियों में ह्रास को रेखांकित करता है।

राहु–केतुः

निर्वाचन के पूर्व लग्न से लग्न-सप्तम एवं निर्वाचन के समय तथा आगे भी चन्द्र से लग्न-सप्तम होना ग्रहण दुर्योग बनाता है तथा वर्तमान पद से पतन की ओर अग्रसर कराता है।

दशा का गोचर-

1. जन्मस्थ बृहस्पति अपने स्थान से छठे भाव में भ्रमण कर षडाष्टक दुर्योग बनाये हुये था किन्तु दशमभाव में उसका भ्रमणशुभ था ।

2. जन्मस्थ चन्द्रमा अपने स्थान से द्वितीय भाव में भ्रमण कर यह भी द्वि-द्वादश दुर्योग बना रहा था ।

जन्मस्थ राहु अपने से द्वादश में भ्रमण कर यह भी द्वि-द्वादश दुर्योग बनाये हुये था ।

अत: उपरोक्त सारे तथ्यों को देखते हुए स्पष्ट है कि श्री आडवाणी को प्रधानमंत्री बनाने के लिये ग्रहगोचर बिल्कुल तैयार नहीं थे ।

०३. श्रीमती सोनिया गाँधी-

जन्म तिथि व समय: 09.12.1946, 21:15, तूरिन, इटली, आर्द्रा-I चरण (रा), वर्ण-शूद्र, नाड़ी-आदि।

कारक: आत्म-सू., अमात्य-शु., भातृ-बृ., भातृ-श., पुत्र-चं., ज्ञातृ-बु., दारा-मं., कारकांश-कुम्भ।

दशा	गोचर	उपलब्धि/घटनाएँ
बु.मं.मं., सिद्धा- सिद्धा तुला-मिथुन	मेष-रा.बु., मिथुन-श.मं शु. (ब), सिंह-बृ., तुला-के.	21.05.2004 प्रधानमंत्री बनते बनते रह गयी ।

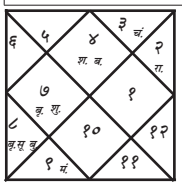

योग-

किसी भी व्यक्ति को राजनीति में सफल होने हेतु बुधादित्य योग का होना आवश्यक होता है। यदि ऐसा योग हो तो व्यक्ति सक्रिय राजनीति न करते हुए भी राजपरिवार अथवा राजनीतिक व्यक्तियों से उसका जुड़ाव अवश्य होता है। इनकी कुण्डली में यह योग पंचम भाव में बना हुआ है, किन्तु यह योग राहु-केतु के अक्ष से अक्षादित होने के कारण ग्रहण दुर्योग बना हुआ है। अत: राजनीति में कोई पद मिलते-मिलते रह जाना यह इस बात को दर्शाता है। यह पंचम भाव में बन रहा है जो प्रारब्ध को रेखांकित करता है। भाग्येश बृ. एवं चतुर्थेय शु. एक साथ चतुर्थ भाव में स्थित है। यह उच्च स्थिति को दर्शाते है और राज्यारोहण की स्थित तक पहुँचाते है। सप्तमेष का वक्र गति से दशम् भाव में स्थित होना और लग्नेष का द्वादश में चला जाना यह शुभ संकेत नहीं दर्शित करता है। मंगल के साथ शनि का षडाष्टक दुर्योग बनना भी सप्तम भाव एवं कर्म भाव के लिए तथा संतान के लिए भी अच्छा नहीं माना जायेगा। सप्तमेष एवं अष्टमेष का वक्र गति से लग्न में बैठना, लग्नेष का द्वादश में बैठना एवं नवम् भाव में राहु का बैठना या स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि ऐसा जातक अपने जन्म स्थान से अत्यन्त दूर वास करेगा और जीवन के अत्यन्त उत्तरार्द्ध में ही इससे राजनैतिक सम्मान, प्रशासनिक सम्मान एवं उपलब्धियाँ प्राप्त होगी तथा इसके न रहने के उपरान्त इसके महत्व को समझा जायेगा।

दशा-

बु.मं.मं. की दशा में ये लोक सभा निर्वाचन के उपरान्त कांग्रेस पार्टी द्वारा प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किए जाने के बावजूद गठबन्धन से जुड़े हुए कतिपय पार्टियों के विरोध के कारण प्रधानमंत्री के पद से वंचित रह गयी। बु.-मं. के मध्य द्वि-द्वादश दुर्योग बना हुआ है। बु. जन्म के समय केतु के साथ बैठकर दूषित है और मं.ष. का षडाष्टक बना हुआ है। बु. एवं मं. के साथ चतुर्थ भाव अथवा चतुर्थेष से सम्बन्ध न होने के कारण प्रधानमंत्री की संभावना क्षीण थी बुध-मंगल के मध्य द्विदाष दुर्योग एवं लग्नेष चन्द्र का द्वादश भाव में स्थित होकर मंगल पर दृष्टि डालना साथ ही अष्टमेष वक्री ष. का भी मंगल पर दृष्टि पड़ना विदेषी मुद्दे को लेकर इन्हें न केवल प्रधानमंत्री के पद से वंचित होना पड़ा, बल्कि तमाम आरोपों का भी सामना करना पड़ा।

गोचर-

ष.मं. का गोचर लग्न से द्वादश एवं चं. के ऊपर से हो रहा था और शनि जन्म से द्वादश में था। बृ. लग्न से दशम् एवं राशि से एकादष तथा जन्म से सप्तम शुभ था जो प्रधानमंत्री बनने के रूप में परिस्थितियाँ तैयार की थी राहु-केतु लग्न से चतुर्थ-दशम् में गोचर कर रहा था और भविष्य में चन्द्र से चतुर्थ-दशम् में गोचर होने की संभावना थी बु. जिसकी महादशा चल रही थी वह भी गोचर में जन्म से षडाष्टक था जो इस बात का प्रमाण है कि अपनी ही पार्टी के कतिपय प्रभावषाली लोग षडयंत्र रच रहे थे अत: प्रधानमंत्री बनने की संभावना क्षीण थी

३. डॉ० मनमोहन सिंह-

जन्म तिथि व समय: 26.09.1932, 14:14, झेलम, पाकिस्तान, अश्लेषा-प्चरण (बु),वर्ण-ब्राहम्ण, नाड़ी-अन्तय।

कारक: आत्म-शु., अमात्य-चं., भातृ-बृ., भातृ-मं., पुत्र-सू., ज्ञातृ-बु., दारा-श., कारकांश-कुम्भ।

दशा	गोचर	उपलब्धि/घटनाएँ
रा.बु.बु. भ्रामरी-भ्रामरी मीन-तुला	मेष-रा.बु., मिथुन-श.मं.शु. (ब), सिंह-बृ., तुला-के.	21.05.2004 तत्समय की परिस्थितियों के कारण प्रधानमंत्री बने।

अब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जब समय से पूर्व और भाग्य से ज्यादा किसी को न कुछ मिला है और न मिलता है और प्रत्येक को अपने प्रारब्ध का फल भोगना ही पड़ता है तो फिर भविष्य जानने का औचित्य क्या है? अतीत की स्मृति, वर्तमान की उत्तेजना और भविष्य की अनिश्चितता के कारण व्यक्ति ज्योतिषी के पास जाता है। व्यक्ति के प्रारब्ध को जानकर उन्हें सही मार्गदर्शन प्रदान करना ज्योतिष विद्या का एकमात्र उद्देश्य है क्योंकि ज्योतिषी न तो भगवान होता है और न ही वह किसी के प्रारब्ध को बदल सकता है। हां, वह सही मार्गदर्शक हो सकता है जिसके द्वारा किंकर्त्तव्यविमूढ़ व्यक्ति को सही दिशा मिलती है। यदि दूसरे शब्दों में यह कहा जाय कि ज्योतिष विद्या प्रारब्ध के संकेत को प्रकट करने वाला महाविज्ञान है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी जिसे पकड़ने की कला ज्योतिषी के पास होना चाहिए। यह ज्योतिषी के अध्ययन, मनन, चिंतन,शोध और अनुभव के साथ-साथ स्वयं के प्रारब्ध से आती है। साथ-ही उसके अन्दर प्रतिभा, तीक्ष्ण बुद्वि और विश्लेषण क्षमता का होना भी आवश्यक है। जब कोई व्यक्ति ज्योतिषी के मार्गदर्शन में अपने जीवन को आगे बढ़ाता है तो उसके जीवन में होने वाली तरक्की से उसे लगता है कि ज्योतिषी ने उसके भाग्य को बदल दिया जबकि ऐसा होता नहीं है। उदाहरणस्वरूप लखनऊ की एक महिला अपने बेटे की जन्मपत्री लेकर मेरे पास आयी वह लड़का शक्तिशाली एवं चंचल था और अपने शैतानियों से मां-बाप को परेशान रखता था। उस लड़के की कुंडली को देखकर मैंने यह परामर्श दिया कि वह अपने बेटे को मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण दिलाए। मां ने ऐसा ही किया और आगे चलकर उस लड़के ने मार्शल आर्ट में कई पुरस्कार जीते। आज वह बच्चा अनुशासित हो चुका है और पढ़ाई में भी उसका मन लगने लगा। इसी प्रकार जे.एन.यू. में पढ़ने वाली एक लड़की की कुंडली देखकर मैंने यह परामर्श दिया था कि वह विदेश जाकर अपना कैरियर बनाए। उसने फ्रेन्च भाषा सीखी और एक विदेशी लड़के से विवाह की अब वह फ्रांस में रहकर अच्छा काम कर रही है।

जहाँ तक ज्योतिषीय उपायों द्वारा प्रारब्ध को बदलने का प्रश्न है? पिछले जन्मों में किए गए कर्मफल व्यक्ति को भोगने ही पड़ते है और उसी के आधार पर व्यक्ति का प्रारब्ध निर्धारित होता है। नियति या प्रारब्ध व्यक्ति के संचित कर्मों के अनुसार बनता है। महाभारत में उल्लेख मिलता है कि जिस प्रकार गायों के झुण्ड में से बछड़ा अपने मां को पहचान लेता है, उसी प्रकार पिछले जन्मों में किए गए कर्म अपने कर्त्ता को पहचान कर उस तक पहुंच जाते हैं। गंगापुत्र भीष्म कहते हैं कि पुरूषार्थ नहीं किया तो प्रारब्ध नहीं मिलेगा। जो भोगने के लिए है उसे भोगना ही पड़ेगा। यह सच है कि प्रारब्ध को पूरी तरह बदला नहीं जा सकता, किन्तु यह भी सच है कि प्रारब्ध को जानकर ज्योतिषीय उपायों के साथ-साथ अपने अच्छे कर्मों के द्वारा उसकेशुभ फलों में वृद्धि एवं खराब फलों में कुछ सीमा तक कमी लायी जा सकती है। हाँ, उन उपायों के द्वारा यदि प्रारब्धजनित तकलीफ मिट नहीं सकती तो सहन करने कीशक्ति अवश्य मिल जाती है।

प्रत्येक काल में मनुष्य के ज्ञान की एक सीमा रही है। अज्ञात क्षेत्र को ज्ञात करने का प्रयास सदैव होते रहे हैं। भौतिक विज्ञान के विकास के कालखण्ड में पदार्थ को सबसे छोटा कण 'अणु' माना जाता था। बाद में वैज्ञानिकों ने अणु के अन्दर परमाणुओं की खोज की इससे स्पष्ट होता है कि किसी भी विज्ञान की जानकारी मनुष्य को एक सीमा तक होती है और उससे आगे की जानकारी के लिए अध्ययन, प्रयोग व अन्वेषण की आवश्यकता होती है। अत: विज्ञान के अन्य विषयों की भांति ज्योतिष विज्ञान की जानकारी जिस सीमा तक है, उससे आगे की जानकारी के लिए इस विज्ञान को भी सतत् अध्ययन, प्रयोग व अन्वेषण की आवश्यकता है।

सन्दर्भ:-

1. जन्म कुण्डली कोष, पं. सूर्य नारायण व्यास, सुबोध पब्लिकेशन, दिल्ली, 1996
2. भाग्य दर्पण, डॉ. हरभजन सिंह मान, अमित पब्लिकेशन, जालंधर, 1992
3. फलित ज्योतिष रेडी रेकनर, तिलक चन्द तिलत, पुस्तक मुद्रक, नई दिल्ली, 1998
4. ज्योतिष रत्नाकर, देवकी नन्दन सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, बनारस 1939
5. फलदीपिका, पं. गोपेश कुमार ओझा, मोतीलाल बनारसीदास, बनारस 1975
6. मानसादरी, पं. सीताराम झा, मास्टर खिलाड़ीलाल संकटा प्रसाद, वाराणसी, सन् संवत, 2053
7. ज्योतिष मंथन, संपादक-सतीश शर्मा,जयपुर पब्लिकेशन, 2013.14.15
8. जनरल ऑफ एस्ट्रोलॉजी, भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली, 1998.2004. 2005.2007

◆◆◆